हस्ताक्षर

अंक 3

कुछ न हुआ, न हो।
मुझे विश्व का सुख, श्री, यदि केवल
पास तुम रहो!

मेरे नभ के बादल यदि न कटे —
चन्द्र रहे गया ढका,
तिमिर रात को तिरकर यदि न अटे
लेश गगन-भास का,

रहेंगे अधर हँसते, पथ पर, तुम
हाथ यदि गहो।

बहु-रस साहित्य विपुल यदि न पढ़ा —
मन्द सबों ने कहा,
मेरा काव्यानुमान यदि न बढ़ा —
ज्ञान, जहाँ का रहा,

रहे; समझ है मुझमें पूरी, तुम
कथा यदि कहो।

'निराला'

÷ हस्ताक्षर ÷

अंक : 3 (जुलाई - दिसम्बर 2006)

संपादक-मंडल

ज्ञान प्रकाश 'राशि'
दिगंत कुमार
तमन्ना बांगा
रूपेश शुक्ल
प्रभाकर देव सिंह

प्रधान-संपादक

रचना सिंह

परामर्श

डॉ. विजया सती

आवरण

'बहुवचन' से साभार

रेखांकन

कुमार भास्कर
अरुंधती

लेखन-सहयोग

शशिकांत शशि
ज्ञान प्रकाश 'राशि'
बत्सला सिन्हा
धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
उत्सव चटर्जी
रचना सिंह

सहयोग-राशि

चालीस रूपये

संपादकीय-संपर्क

हिन्दी-विभाग, हिंदू-कॉलेज
दिल्ली-विश्वविद्यालय
दिल्ली - 110007
मोबाइल : 9891039305

* हिन्दी-विभाग, हिंदू कॉलेज की अर्धवार्षिक पत्रिका *

* प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'हस्ताक्षर' का सहमत होना आवश्यक नहीं है *

* अनुक्रम *

पृष्ठ संख्या

चौखट : रचना सिंह 1

विविधा : मैं कविता का निर्लज्ज पक्षधर हूँ 3
(अशोक वाजपेयी से साक्षात्कार)

कविताएँ : हरीश नवल, उत्सव चटर्जी 16
मनोज कुमार, संगीता बिष्ट

आगत : राजकुमार कुम्भज 22

बाज़ार और स्त्री-मुक्ति के प्रश्न : मैनेजर पाण्डेय 23

मनोहर श्याम जोशी : उदात्त के ध्वंस का किस्सागो 32
रामेश्वर राय

अपनी ज़मीन : संबंधों के शिल्पी : शरतचंद्र - ज्ञान प्रकाश राशि 38

देशांतर : चुप्पी का सर्जक : मारक्वेज़ - अजित कुमार घरा 44

पानी में डूब कर मरा हुआ संसार का परम सुंदर आदमी 48
(कहानी : गेब्रियल गार्सिया मारक्वेज़)
रूपांतर : इंदु प्रकाश कानूनगो

इन दिनों : अदब भी ज़िन्दगी की तरह एक सफ़र है 57
(उर्दू पर खुलता दरीचा - गोपीचंद नारंग)
- विजया सती

तथ्यात्मक सूत्रों के पाले में झूलता न्याय 59
(न्याय का गणित - अरुंधति राय)
- दिगंत कुमार

एक नयी दिशा की तलाश में 62
(नींद थी और रात थी - सविता सिंह)
- तानिया

पानी खाई कामगर हथेली की खुरदुराहट 65
(खुरदुरी हथेलियाँ - अनामिका)
- रूपेश शुक्ल

पांडुलिपि : छः कविताएँ - राजेश जोशी 70

परिशिष्ट : उम्मीद नहीं छोड़ती कविताएँ 77
कविताएँ : कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह
मंगलेश डबराल, उदय प्रकाश, निर्मला पुतुल

चौखट

'हस्ताक्षर' का तीसरा अंक आपके सम्मुख रखते हुए मैं इसके भविष्य के प्रति आश्वस्ति का अनुभव कर रही हूँ। पहले दो अंकों को मिली प्रशंसा और लोकप्रियता ने यह प्रमाणित कर दिया है कि यदि सहेजने का माद्दा हो तो क्रूर से क्रूर समय में भी मृदुल भाव सुरक्षित रह सकते हैं और उन्हें ग्रहण करने वाले लोग भी। महाविद्यालय परिसर से निःसृत रचनाशीलता के ममत्वपूर्ण स्वागत से हम शिक्षकों और छात्रों के प्रयासों को एक आधार और संबल मिला है। इस तरह की पत्रिकाएँ निकालने की अपनी चुनौतियाँ होती हैं, जिनमें आर्थिक चुनौती भी शामिल है। ये चुनौतियाँ कई बार विचलन की स्थिति पैदा कर देती हैं। लेकिन मुझे ये स्वीकार करते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि विद्यार्थियों ने अपने अदम्य उत्साह और जी तोड़ परिश्रम से हमारे हौसले को जीवित रखा है। इस क्रम में उन्होंने पत्रिकाओं को बाँधने का काम भी स्वयं किया है। और यह भी सुखद सत्य है कि बाँधने की इस प्रक्रिया में वे 'हस्ताक्षर' से और दृढ़ता से बँध गये हैं।

इस अंक की शुरूआत सुप्रसिद्ध कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी से विद्यार्थियों की बातचीत के साथ हुई है। कविता को अपनी 'पर्याप्त नागरिकता' मानने वाला यह कवि किस प्रकार कविता में अपने सारे सवालों के हल ढूँढ लेता है - यह ध्यान देने योग्य है। पिछले अंक में हमने 'बाज़ार और स्त्री-मुक्ति के प्रश्न' विषय पर मैत्रेयी पुष्पा का व्याख्यान दिया था। उसी क्रम में इस बार मैनेजर पाण्डेय के विचार प्रस्तुत हैं। इस विषय की महत्ता पर प्रश्न-चिन्ह लगाते हुए पाण्डेय जी मानते हैं कि यह सवाल एक सीमित वर्ग से जुड़ा हुआ है और रोटी के सवाल के सामने स्त्री-मुक्ति का सवाल अत्यधिक का मालूम होता है। यह स्थापना हमें इस विषय एक नये प्रस्थान बिंदु से सोचने के लिये विवश करती है।

बंगाल की संस्कृति को अपनी रचनाओं में समेटने वाले शरतचंद्र की अपार लोकप्रियता के आधार में उनका जो रचनाकर्म है, जो संवेदना है - उसे ज्ञानप्रकाश 'राशि' ने 'अपनी ज़मीन' स्तंभ में पकड़ने की कोशिश की है। मारक्वेज़ साहित्य-जगत में विशेष तौर पर जादुई यथार्थवाद के लिए जाने जाते हैं। 'देशांतर' में पाठक उनके रचना-कर्म से परिचित हो सकेंगे। साथ ही इंदुप्रकाश कानूनगो द्वारा अनूदित मारक्वेज़ की एक कहानी भी दी जा रही है, जो उनकी रचनात्मकता की समझ को स्पष्ट करने में सहायक होगी। 'इन दिनों' स्तंभ में पिछले एक वर्ष के भीतर प्रकाशित हुई पुस्तकों की चर्चा है। विद्यार्थियों की कविताएँ हमेशा की तरह अनगढ़ और सोंधी हैं। राजेश जोशी हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि हैं। उनकी कविताएँ हम बार-बार पढ़ते हैं लेकिन 'पांडुलिपि' में राजेश जोशी की कविताओं को उनकी हस्तलिपि में पढ़ने

पिछले दिनों हिंदी कथा-साहित्य को एक नयी पहचान देने वाले कथाकार मनोहर श्याम जोशी का निधन हुआ, जिससे साहित्य-जगत में एक शून्य उपस्थित हो गया है। इस शून्य को भरने के अभिप्राय से डॉ० रामेश्वर राय ने उनके रचना-कर्म को फिर से टटोलने की महत्त्वपूर्ण और सार्थक कोशिश की है। मनोहर श्याम जोशी के साथ ही पिछले दिनों हमसे जुदा हुए महान शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ और अनूठे फिल्मकार ऋषिकेश मुखर्जी को हस्ताक्षर-परिवार अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देता है।

इस अंक का विशेष आकर्षण इसका परिशिष्ट है। हिंदू कॉलेज के हिंदी-विभाग के वार्षिकोत्सव 'अभिधा' के दौरान 23 दिसम्बर 2005 को आयोजित नवि-गोष्ठी में हिंदी के पाँच बड़े कवियों का काव्य-पाठ सम्पन्न हुआ। उन मुखरित कविताओं को सहेजने के क्रम में हमने उन्हें लिपिबद्ध किया है। यद्यपि ये सारी कविताएँ कहीं-न-कहीं प्रकाशित हैं, किंतु एक साथ इतने महत्त्वपूर्ण कवियों की चुनिंदा कविताओं को पढ़ने का अपना मजा है।

अंत में विभाग के सभी शिक्षकों को तथा 'हस्ताक्षर' से जुड़े सभी विद्यार्थियों को धन्यवाद और साथ ही बधाई भी, क्योंकि 'हस्ताक्षर' ने अपनी पहली वर्षगाँठ पूरी कर ली है। आगे भी हमें इन सब का और आपका सहयोग मिलता रहेगा, इस उम्मीद के साथ अपनी बात को विराम देती हूँ।

रचना सिंह